PHILOSOPHY

PG, Paper VII (Sem II)

Religion (Gandhi)
गाँधी दर्शन में धर्म

Dr. S. K. Singh
Mob. - 9431449951.

→ गाँधी धर्म का सच्चा सार नैतिकता में निहित मानते हैं। उनके शब्दों में सच्ची नैतिकता और सच्चा धर्म एक-दूसरे के साथ अविच्छेद्य रूप से बंधे हुये हैं। गाँधी का मानना है कि 'धर्म' का बेहतर अभिप्राय औपचारिक या रूढ़िगत धर्म नहीं है। धर्म यद्यपि अपने बाह्य स्वरूपों में एक-दूसरे से भिन्न है परन्तु अपने मौलिक सिद्धान्तों के मामले में एक समान है।

→ गाँधीजी की धर्म भावना विभिन्न धर्मों के महान सन्तों एवं उनके उपदेशों से अनुप्राणित थी। 'गीता' तो उनका सदैव ही मार्गदर्शन करती रही। उनकी धर्मनिष्ठता ने उन्हें कर्मयोगी बना दिया। गाँधी का विचार है कि त्याग संसार से पलायन नहीं और न मोक्ष मृत्यु के बाद की स्थिति है। सच्चा त्याग तो अनासक्त कर्मयोग है एवं सच्चा मोक्ष वस्तुतः अपने क्षुद्र स्वार्थ और कलुषित मनोवेगों से अपने को मुक्त कर लेना है।

→ प्रत्येक धर्म में कुछ अच्छाईयाँ और कुछ बुराईयां होती है किन्तु सभी धर्मों के आदर्श अच्छे हैं।

→ गाँधी धर्म-परिवर्तन के विरुद्ध हैं। उनका मानना है कि बिना हृदय परिवर्तन के धर्म परिवर्तन व्यर्थ है। यदि कोई व्यक्ति बिना हृदय परिवर्तन हुये किसी

Scanned with CamScanner

कारण दूसरे धर्म को स्वीकारता है तो यह उसका वास्तविक धर्म परिवर्तन नहीं है और इसका कोई अर्थ नहीं है।

→ धर्म तो एक वैयक्तिक साधना है। हमें दूसरों के जीवन की श्रेष्ठ बातों का अधिकाधिक लाभ लेते हुये अपने आदर्शों के अनुसार जीवन-यापन करने का प्रयास करना चाहिये। इस प्रकार हम ईश्वर प्राप्ति की आध्यात्मिक साधना को भी अधिक समृद्ध कर पायेंगे।

→ गाँधीजी मूलतः मानवतावादी हैं। रूढ़ि एवं ~~अंध~~ अन्ध विश्वास के विरोधी ~~थे~~ थे - "मैं किसी ऐसे धार्मिक सिद्धान्त को स्वीकार नहीं करता जो बुद्धि को न जंचे या जो नैतिकता के विरुद्ध हो। हिन्दू-धर्म में कतिपय बुराईयां हैं किन्तु सार एवं सार्वभौम रूप में हिन्दू-धर्म सर्वश्रेष्ठ है। उपनिषद्, गीता एवं रामचरितमानस ने गाँधीजी को नैतिक बल हमेशा प्रदान किया।

→ सभी धर्मों के प्रति समान भाव गाँधीजी के 'धर्म' संबंधी विचार की अपनी विशेषता है। अन्ततः वे कहते हैं - 'मेरे लिये सत्य से परे कोई धर्म नहीं है और अहिंसा से परे कोई ~~का~~ कर्तव्य नहीं है। 'सत्य' यहाँ ~~आन्त~~ किसी परिस्थिति में अन्तरात्मा की आवाज या अन्तर्नाद है और यही ईश्वर है, यही धर्म है और इसके अनुरूप कर्तव्य का पालन अहिंसा के माध्यम से संभव है।

Scanned with CamScanner